ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 177-180

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

भीष्म साहनी के उपन्यासों में सामाजिक जीवन दृष्टि

(विशेष सन्दर्भः 'नीलू नीलिमा नीलोफर' में प्रेम एक स्वभाविक प्रक्रिया)

किरन यादव

शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 13.06.2020, Revised- 18.06.2020, Accepted - 21.06.2020 E-mail: pkiran200388@gmail.com

सारांश : *उपन्यास मूलतः यथार्थवादी दृष्टि से गद्यात्मक विधा है। इसे आधुनिक युग का गद्यात्मक महाकाव्य कहते है। जिसमें इस नश्वर जगत् की विविधता, गंभीर भाव–बोध और नए मानव मूल्य अपने आप साज–संभार के साथ प्रकट होते हैं। अर्थात् उपन्यास विधा में आधुनिक युग की सम्पूर्ण जटिलताएँ जितने जीवन्त रूप में व्यक्त हो सकती है उतनी अन्य विधाओं में नहीं। वस्तुतः उपन्यास ने आधुनिक युगीन यथार्थवादी परिवेश में जन्म ग्रहण किया है। ''सन् 1960 के बाद ऐसी अनेक राजनीतिक, सामाजिक, घटनाएँ हुयी, जिनके कारण आम आदमी नव स्वतंत्रता, उससे मिलने वाले काल्पनिक अश्वासनों की स्थिति से ऊबकर एक नयी सोच के लिये प्रयत्नशील हुआ।''[1] साहित्य समाज का संवाहक है एवं समाज साहित्य का दोनों एक दूसरे के पूरक है। दोनों में से किसी एक को जानने के लिये दूसरे को पूर्णतः जानना अनिवार्य एवं आवश्यक है। साहित्य समाज का आईना है, जिसमें समाज का असली प्रतिबिम्ब लक्षित होता है। साहित्य की प्रमुख विधा उपन्यास समाज के जीवन मूल्यों की पहचान है।*

कुंजीभूत शब्द– उपन्यास, यथार्थवादी, गद्यात्मक, जटिलताएँ, आधुनिक, साहित्य, अनिवार्य, आईना, परिवेश ।

सामाजिक जीवन दृष्टि से अभिप्राय है, जीवन संबंधी दृष्टिकोण। आधुनिक हिन्दी कथा की प्रगतिशील परंपरा में सामजिक उपन्यासों का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक उपन्यासों में सामजिक जीवन से सम्बन्धित आने वाली कठिनाइयों एवं विचारधाराओं की अभिव्यक्ति की जाती है। इसमें सामजिक जीवन के प्रति जो मनुष्य का दृष्टिकोण है उसे सम्मिलित किया जाता है। अतः सामजिक जीवन से तात्पर्य है कि जीवन का विश्लेषण सामाजिक दृष्टि से करना। सामाजिक जीवन दृष्टि के अतंर्गत भौतिक एवं आध्यत्मिक दृष्टिकोण से समाज की समस्याओं पर विचार–विमर्श किया जाता है। सामाजिक जीवन में समाज के अनेक पहलुओं, उनकी मान्यताओं, रीति–रिवाजों और समाज की आर्थिक विषमताओं आदि पर लेखक के विचार और दृष्टिकोण समाहित रहते हैं। समाज को केन्द्र में रखकर लिखे गये उपन्यास की दो कोटियां हैं। इन्हें हम समाजवादी और सामाजिक उपन्यास कह सकते हैं। सामजिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन से सम्बन्धित मानव चरित का चित्रण रहता है।

वस्तुतः समाज जैसा प्रत्यक्ष दिखता है वैसा है नहीं। सही रूप से देखने के लिये, उसके सत्य का विश्लेषण करने के लिए एक दृष्टि चाहिए और वह दृष्टि मार्क्सवादी ही हो सकती है।

नीलू नीलिमा नीलोफर उपन्यास में प्रेम एक स्वाभाविक प्रक्रिया– सामाजिक जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण इस उपन्यास साहित्य के अंतर्गत विशिष्ट रूप से समाहित हुआ है। समाजवादी उपन्यास में प्रेमतत्व का गंभीर प्रभाव दिखाई पड़ता है। प्रेम अंतर्मन को छूने की कला है, एक कोमल एहसास है, एक अबूझ पहेली है, एक सुखद अनुभूति है। जितने व्यक्ति उतनी तरह से इसकी अभिव्यक्ति, उतने प्रकार के इसके नाम। 'प्रेम' खिलता है मुक्ति के आकाश में, 'प्रेम' का जन्म होता है स्वतंत्रता के परिवेश में।

किसी भी दो अनजान व्यक्तियों के बीच अदृश्य आकर्षण और सब कुछ न्योछावर करने की तमन्ना यदि दो व्यक्तियों के मन के बीच हो तो, प्रेम, शरीर के बीच हो तो, वासना, यदि वतन–समाज के बीच हो तो जज्बा, प्रभु से हो तो भक्ति और वस्तुओं के प्रति हो तो आशक्ति। 'प्रेम' वह अवस्था है, जहाँ सारे विचार, सारी इच्छाएँ विस्मृत कर एक बिंदु पर केन्द्रित हो जाती हैं। प्रेम कोई व्यवसाय नहीं है, कोई लेन देन नहीं है, बल्कि यह सिर्फ समर्पण है। प्रेम में अपने पराये का भेद मिट जाता है सिर्फ और सिर्फ एक दूजे में खो जाने की चाहत रह जाती है।

'प्रेम' मानव जीवन के शुष्क पड़े क्षेत्र में अचानक उपलब्ध शीतल जल की प्राप्ति के समान है। तीव्र तूफानी गर्म हवाओं और भयभीत कर देने वाली बिजली की तेज चमक के उपरान्त जल की शीतल बूँदे धरती के हृदय पर गिरती है तो विलाप करती मिट्टी निढ़ाल हो जाती है। सूर्य की ऊष्मा भरी किरणों के दर्दनाक एहसास को वह भुला देती है। क्योंकि उसकी चाहत उसे प्राप्त हो चुकी है। वर्षा की बूंदे पाकर प्रकृति अनेक रंगों में रंग जाती है और

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

यहीं से शुरू होती है फूलों की दुनियाँ।

भीष्म साहनी प्रेम को स्वाभाविक या प्राकृतिक प्रक्रिया मानते है। हजारों वर्षों से यह होता आया है। 'बसंती' उपन्यास में बसंती और दीनू का नीलू नीलिमा नीलोफर और सुधीर का आकर्षण स्वाभाविक बन पड़ा है। भीष्म साहनी के अंतिम उपन्यास 'नीलू नीलिमा नीलोफर' में यही प्रक्रिया आगे बढ़ती है।

इस उपन्यास में समानान्तर चलने वाली दो प्रेम कहानियों के माध्यम से भीष्म जी सामाजिक, पारिवारिक एवं वैवाहिक समस्याओं को रेखांकित करते हुये सामाजिक जीवन पर अपना दृष्टिकोण डालने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में साम्प्रदायिकता का सच बयां करने वाले समीक्ष्य उपन्यास में उन वास्तविक कारणों को खोजने का भी भगीरथ प्रयत्न किया गया है। भीष्म साहनी जी 'नीलू नीलिमा नीलोफर' के माध्यम से विशेष रूप से निम्न बिन्दुओं की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं।

भारतीय समाज–जीवन में विवाह संस्था का अनन्य महत्तव है। विवाह एक पवित्र संस्कार होता है। स्त्री और पुरूष दोनों में ही यह संस्कार पूर्ण रूप से समाहित रहता है। विवाह की आवष्यकता धर्म–बन्धन के साथ–साथ भाव बन्धन के लिये होती है। डॉ प्रतिभा गोपाल ने विवाह की आवश्यकता बताते हुये लिखा है कि ''व्यक्ति पत्नी के साथ ही अपने विविध कर्तव्यों का भली प्रकार निर्वाह कर पाता है। धार्मिक क्रियायें पत्नी के साथ ही सम्पन्न की जा सकती हैं अकेले नहीं। ''इसी कारण से पत्नी सहधर्मचारिणी होती है।''[2] परन्तु आज विवाह संस्कारों की परिभाषा में कुछ अन्तर आया है। यहां पर 'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में हम विवाह संस्कार के विविध पहलुओं को देखेगें। 'बसंती' उपन्यास में बसंती दीनू के साथ भाग जाती है, परन्तु विवाह की रस्म अदा करती है। ''जंतरी से फाड़ी हुयी, तस्वीर के सामने दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर खड़े हुये थे कि बसंती ने उसके बालों में फूल खोसा था, कि उसने भी बसंती के बालों मै फूल टांका था, कि उसने बसंती के बालों में लाल पेंसिल से रंग भरा था, बसंती ने सब कुछ बता दिया और यह भी आसमान में चाँद खिला था और दोनों ने छिटकी चाँदनी में विवाह की शपथ ली।''[3] इसी प्रकार से 'नीलू नीलिमा नीलोफर' में नीलू मुसलमान है और सुधीर हिन्दू दोनों अपनी मर्जी से विवाह करते हैं भीष्म जी के शब्दों में ''विवाह संस्कार आर्य समाज मंदिर में हुआ था। जगदीश अपने चार–पाँच दोस्तों– संगियों को भी पकड़ लाया था। गेंदें के फूलों के हार ले आया था। फिर दोनों भागकर नीलू के लिए चटकीले रंग की साड़ी ले आये थे। जगदीश सारा रास्ता बतियाता रहा था नीलू इस बीच जगदीश के कमरे में अकेली बैठी रही थी और जब निकली थी तो केवल चटकीली साड़ी पहने हुये, बल्कि माथे पर चौड़ी सी सिंदूर की बिंदी लगाये हुए और हंसती हुयी।''[4] इसी प्रकार यशपाल के 'झूठा–सच' उपन्यास में ''तारा पढ़ी लिखी नारी है। वह मुसलमान लड़के पर अनुरक्त है तथा शादी के लिये भी तैयार है लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाती, क्योंकि जिस समय उपन्यास लिखा गया था उस समय इतना ही काफी था, कारण साफ है– उस समय समाज में ऐसी परिस्थितियां मौजूद नहीं थी।''[5] बदलते परिवेश और तेजी से अनुकूल परिस्थितियों के बदौलत भीष्म साहनी की 'नीलू' और 'नीलिमा' ने वह कार्य कर दिखाया जो यशपाल की 'तारा' नहीं कर पायी थी।

साहित्यकार समाज में रहकर परिवर्तन तलाशता है, इन अनुभवों की संभावनाओं को साहित्य में लेखबद्ध करता है। इन बदलावों और अनूठें प्रयोगों को हमारे समाज का प्रबुद्ध पाठक पढ़ता है तो उसके मानस पटल पर ये विचारणीय प्रश्नों के रूप में आते हैं।

बेमेल विवाह से तात्पर्य है, जिस विवाह में पति–पत्नी एक दूसरे से बिल्कुल अलग हों। जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति, विचारधारा, शौक, मिजाज, शहरी या ग्रामीण परवरिश, शिक्षा, आयु, रंग–रूप आदि। 'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में भीष्म साहनी जी ने नीलिमा और सुबोध के माध्यम से बेमेल विवाह की ट्रेजडी को समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किये हैं। नीलिमा बड़े बाप की बेटी है, जो मन मौजी खुले विचारधारा वाली, हँसमुख और स्वतंत्र रूप से रहने की अभ्यस्त है। नीलिमा अल्ताफ से बेइंतहा प्रेम करती है उसी से वह विवाह करने के ख्वाब भी देखती है, परन्तु दादी और डैडी के खातिर वह अपने प्यार को तिलांजली देकर सुबोध से विवाह कर लेती है। सुबोध के साथ उसके नये जीवन का प्रारम्भ होता है। परंतु यही से उनके जीवन में बेमेल विवाह आड़े आने लगता है। दोनों की जीवन शैली अलग थी, दोनों के संस्कार अलग थे। इस कारण दोनो में सहमति नही बन पाती है और आये दिन एक दूसरे पर आरोप प्रत्यरोप लगाये जाते हैं। भीष्म जी के शब्दों में ''क्यों? यहाँ क्यों खड़े हो? तुमने घंटी नहीं बजाई?'' मैं अकेला कैसे अन्दर चला जाता? तुमने इतनी देर कर दी। कहते हुए सुबोध ने घंटी का बटन दबा दिया। पर उसी क्षण उसकी नजर नीचे फर्श पर पड़ी। पास में खड़ी नीलिमा नंगे पाँव खड़ी थी। यह चप्पल पहनकर क्यों नहीं आयी। नंगे पाँव चली आई! सुबोध का पारा तेज हो गया और वह बौखला उठा।''[6] नीलिमा अपने पति द्वारा हमेशा प्रताड़ित होती रहती है। अक्सर वह पिटती रहती है। नीलिमा जिंदगी के इस भयावह अंधेरे बंद कमरे में चीखती

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

रहती है। ''मुझे ढूंढ़ लो देखो मैं कहां हूँ। मुझे ढूढ लो।''

हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है जिसमें नारी ही हमेशा से शोषण का शिकार होती रही है। नारी वर्ग को पुरूष वर्ग द्वारा हमेशा प्रताड़ित किया गया है। नारी के सर्वस्व पर पुरूष हमेशा अपना अधिकार बताता आया है। पुरूष यह नहीं समझ पाता कि नारी प्रताड़ना नहीं प्रेम चाहती है, वह प्रेम की वस्तु है प्रताड़ना की नहीं। नारी कभी द्रौपदी के रूप में, कभी सीता के रूप में, कभी अहल्या तो कभी सत्यवती के रूप में पीड़ित होती रही है। भीष्म साहनी जी ने इस उपन्यास के माध्यम इस समस्या को समाज के सामने ले आने का प्रयास किये हैं ताकि नारी को अपने अधिकार के बारे में जानकारी हो और वह भी सही ढंग से अपना जीवन यापन कर सके। इस उपन्यास में भीष्म साहनी जी चंबेली के मुख से कहलवाये हैं– ''बाद मे पिसना तो सभी औरतों को है। बच्चे भी जनेगीं, पालेगी। चौके में खटती रहेंगी, अपने घरवाले को भी संभालेंगी। इस पर भी घरवाला कभी सीधे मुंह बात नही करेगा। औरत तो दुनियां में बेवकूफ़ बनने के लिए आई है। घरवाला दो चूड़ियाँ बनवा देगा तो वह फूली नही समाएगी। पर उसे जिदंगी में मिलता क्या है?''[7] इस उपन्यास में नीलिमा द्वारा सुबोध के साथ शादी करने का फैसला अत्यन्त शीघ्र में किया गया था जो कि उसके विश्वास की कसौटी पर खरा नहीं उतर पाया। सुबोध नीलिमा को दोस्त नही मानता उसे पत्नी भी नहीं मानता बल्कि अपनी वासना पूर्ति और पदोन्नति के लिए सीढ़ी मात्र मानता है। सुबोध का व्यवहार उपन्यास में कहीं से भी नारी स्वतंत्रता की ओर संकेत नहीं करता है। पुरूष प्रधान समाज की ज्यादतियो, अधिकार जमाने की परम्परा में इज़ाफा करता है। इसलिए नीलिमा सुबोध को अपना तन ही सौंप पाती है मन नहीं।

जाति, धर्म–पंथ आदि का इतिहास हमारे देश में बहुत पुराना है। ये जन्म के साथ ही मनुष्य से चिपक जाते हैं। स्वाधीनता के बाद सन् 1950 ई० में संविधानकर्ता ने हमारे देश को 'धर्मनिरपेक्ष' घोषित किया और भारतीय संविधान में समता, बंधुता का प्रावधान रखा, जिसमें सभी धर्म और जातियों के लिए समान अधिकार की घोषणा की गयी। डॉ० जालिंदर इंगले के षब्दों में ''हिंदू–मुस्लिम के जातीय फसाद आज भी होते हैं। एकता एवं समानता की घोषणाएँ सिर्फ कागज पर अवश्य हुयी है, परन्तु उसका प्रभाव मानव मन पर नहीं हो पाया।''[8]

उपर्युक्त कथन से यह वीदित होता है कि 'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में मुस्लिम और हिंदू (नीलू–सुधीर) के प्रेम–विवाह के बाद जो प्रतिक्रिया उठती हैं– जिसमें धार्मिक कट्टरपन की स्थिति एवं साम्प्रदायिकता की चिंगारी जिसमें नीलू झुलस जाती है। जब पुलिस अफसर ने नीलू एवं सुधीर के परिवार वालों को पुलिस स्टेशन में बुलाकर उन सबको बुलाने का प्रयोजन बताया तो नीलू का भाई हमीद आग–बबूला हो जाता है ''यह हमारी बहिन हमें रूसवा करने पर तुली हुई है, हमारी नाक कटवाने यहां पहुंच गयी है, बेपर्द–होकर हरामजादी।''[9] नीलू के पिता भी कहते हैं– ''इंस्पेक्टर साहिब यहां हिन्दू लड़का मुसलमान लड़की को व्याहने लाया है। आप सरकारी मुलाजिम हैं। चूंकि लड़का हिंदू है आप भी हिंदू हैं, आपकी हमदर्दी इस लड़के के साथ है अगर लड़का मुसलमान होता और लड़की हिंदू होती तो आपका रूख कुछ दूसरा ही होता।''[10]

धार्मिक कट्टरता लोगों के जेहन में कूट–कूटकर भरी हुयी है, उन्हें पग–पग पर बेचैन किये रहती है। ऊधर नीलिमा की दादी को जब पता लगता है कि नीलिमा अल्ताफ़ नाम एक मुस्लिम लड़के से प्यार करती है और उसी से शादी करना चाहती है तो वह व्याकुल हो उठती हैं– ''अक्ल से काम लो, बेटा। लड़का भलामानुस है, सब ठीक है। पर तुम्हारी बेटी को सारी उम्र काटनी हैं व्याह होने की देर है कि हमारी बेटी पर्दे में चली जायेगी। उन लोगों का रहन–सहन, खाना–पीना, उठना–बैठना और तरह का ..... आँखे खोलकर चलते हुए भी गड्ढे में कूद रहे हो।''[11] भीष्म साहनी के इस उपन्यास में अधिक या कम अर्थात् छींटो के रूप में ही सही लेकिन सांप्रदायिकता विद्यमान जरूर है और भीष्म साहनी जी ने इसका समाधान इस प्रकार बताया है– हमें बौद्धिक और धार्मिक विचारों से इतना ऊपर उठना होगा कि सम्प्रदायिकता खुद–ब–खुद पानी में मिट्टी की तरह बैठ जाए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हमारे देश में शिक्षा का स्तर निम्न था। परंतु जैसे–जैसे हमारी आवश्यकतायें बढ़ती गयी वैसे–वैसे शिक्षा के स्तर में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। भीष्म साहनी अपने कथा साहित्य के माध्यम से इस नारी शिक्षा रूपी पवित्र यज्ञ को प्रज्वलित करने में पूर्वनिष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ भागीदार बने।

समीक्ष्य अपन्यास में 'नीलू' (नीलोफर) मुसलमान है। वह दिल्ली जैसे महानगर में पढ़ने के लिए जाती है। वहां पर उसकी मुलाकात सुधीर नामक एक लड़के से होती है जो हिंदू जाति का है। वह चित्रकार है। नीलू उससे प्रेम करने लगती है। अपने प्रेम को आँखो के सामने देखने के लिए जाति, धर्म को वह बाधक नहीं मानती। पुलिस स्टेशन पर घर वालों के डांट–डपट के बावजूद अपने फैसले से विचलित नहीं होती है और अंत में– ''मैं सुधीर के साथ जाऊंगी''[12]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

नीलू और सुधीर के प्रेम में प्रगाढ़ता है कि वे अपने प्रेम को पाने के लिए कठिन से कठिन मार्ग पर भी चलने से पीछे नही हटते हैं और उनके प्रेम में एक दूसरे को पा लेने की अकुलाहट भी है जिसका एक उदाहरण यहां द्रश्टव्य है– ''मुझे मालूम था तुम आओगे। पर तुमने इतनी देर कर दी। दोपहर ढल रही थी। साँए लंबे हो रहे थे। वे चल तो रहे थे शहर की जानी–मानी सड़क पर जिससे उनके पाँव परिचित थे, दोनों तरूण दोनों अकेले पर एक दूसरे का अवलंब बने, केवल अपने सपनों और प्रगाढ़ प्रेम की पूंजी लिये हुए।''[13]

भीष्म साहनी जी के इस उपन्यास में दो सामानान्तर कथाएं चलती हैं। दोनों में 'प्रेम' प्रमुख तत्व के रूप में विद्यमान है। 'प्रेम' दो सच्ची आत्माओं का मिलन है तो प्रेम–विवाह दो सच्चे स्त्री–पुरूषों का विवाह बंधन में बंधना है परंतु 'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में अन्तर्जातीय एवं अन्तर्धमीर्यय सच्चे 'प्रेम' एवं प्रेम–विवाह को समाज आसानी से पचा नहीं पाता है। नीलू–सुधीर के विवाह के प्रथम अवसर पर प्रतिक्रिया उसके घर से ही शुरू होती है।

सुधीर जब नीलू के बारे में अपने घर पर पहली बार बताता है तो उसके बाबु जी ने जलती लकड़ी उठा ली थी और उसे घर से निकल जाने की धमकी भी दी– ''न किसी से पूछा न बताया और आज हमें नोटिस दे रहा है कि मुसलमानी से व्याह करेगा। हरामी! दूर हो जा मेरी आँखो से।''[14] सुधीर के परिवार के लोग स्वयं ऊँची जाति के नहीं थे, पर हिंदू तो थे, मुसलमान तो नहीं थे। ''चुल्हे के सिरहाने बैठी दुबली–पतली सुधीर की माँ, न तीन में न तेरह में जिसकी घर में कोई नहीं सुनता था, मुसलमान लड़की का नाम सुनते ही काँप गयी थी।''[13] उपर्युक्त कथन से सुधीर की माँ का जाति और धर्म के प्रति क्या दृष्टिकोण है यह ज्ञात किया जा सकता है।

नीलू के परिवार वाले भी इस प्रेम–विवाह का तीव्र विरोध करते हैं। इस प्रेम–विवाह के बाद होने वाली घरेलू लड़ाईयों को साहनी जी ने सामन्य विवाह की भांति ही बातया है उनका मानना है कि यदि पति–पत्नी में झगड़े होते है तो वहां प्रेम–विवाह को कारण नहीं मानना चाहिए। झगड़े तो कभी भी किसी बात पर हो सकते हैं।

आज भी हमारा समाज छूआछूत की बीमारी से उबर नहीं पाया है। हमारे समाज में यह बिमारी आज भी दिखायी पड़ती है। यही बिमारी साहनी जी की निगाहों से बच नहीं पायी। इन्होनें अपने उपन्यास 'नीलू नीलिमा नीलोफर' के माध्यम से इस छूआछूत बिमारी पर अपनी दृष्टि डाली है, ताकि समाज में इस छुआछूत बिमारी के प्रति जागरूकता आ सके। साहनी जी इस उपन्यास में हलवाई के माध्यम से कहलवाते हैं– ''हलवाई तनिक ठिठका, फिर लहजा बदलकर बोला, बड़े तेवर दिखाने लगे हो, मास्टर! कौन जात के हो? 'आपको इससे मतलब?'मतलब क्या? भंगी चमार हो तो हम कुछ नहीं कहेंगे। तुम जानो, तुम्हारा काम। पर अगर अच्छी जात के हो तो सँभल के रहो।''

निष्कर्श – भीष्म साहनी के सामाजिक जीवन दृष्टि का सार यह है कि उन्होंने जीवन को सामाजिक दृष्टि से देखा है। लेखक अपने उपन्यास 'नीलू नीलिमा नीलोफर– को केन्द्र में रखकर उसका विवेचन– विश्लेषण समाज को दृष्टि में रखकर किया है। भीष्म साहनी प्रगतिशील लेखक हैं। वे धर्म, जाति को विशेष महत्व न देकर सांम्प्रदायिकता रहित मानवता पर आधारित समाज की स्थापना पर बल देते हुये सच्चे प्रेम का संदेश दे रहे हैं। साहनी जी का आखिरी जाम षीला के नाम 'नीलू नीलिमा नीलोफर' 'तमस' की तुलना में न सही लेकिन उनके प्रगतिशील विचारों की फुलझड़ी है जो निःसन्देह उन घरों में रोशनी छोड़ने में सफल हुआ है और होगा–जो दाम्पत्य जीवन और वैवाहिक जीवन के कटु अनुभवों के अंधेरे में उजाले जीवन की तलाश में प्रयासरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. समकालीन हिन्दी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष, डॉ० जालिंदर इंगले, चन्द्रलोक प्रकाशन, । संस्करण– 2014 पृ०– प्रसंगवश
2. भारतीय संस्कृति, डॉ० प्रति प्रभा गोयल, पृं० 86
3. बसंती, भीष्म साहनी, नेताजी सुभाश मार्ग, दरियागंज – दिल्ली, संस्करण 1993 पृ० 84।
4. नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चौथा संस्करण 2018, पृ० 22
5. यशपाल, झूठा–सच, विपल्व प्रकाशन, तीसरा संस्करण 1963।
6. नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चौथा संस्करण 2018, पृ० 151।
7. वही पृ० 32।
8. समकालीन हिन्दी उपन्यास वर्ग एवं वर्ण संघर्ष, डॉ० जालिंदर इंगले, चन्द्रलोक प्रकाशन, संस्करण 2014, पृ० 89।
9. नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली चौथा संस्करण 2018, पृ० 20
10. वही पृ० 20–21।
11. वही पृ० 79।
12. वही पृ० 22।
13. वही पृ० 14।
14. वही पृ० 24।
15. वही पृ० 24।

*****